

गैबरियल गार्सिया मारकेज़
और प्लिनियो आपूलेओ मेनदोज़ा के बीच संवाद

अमरूद की महक

स्पेनिश से हिंदी अनुवाद
समीर रावल



अमरूद की महक

गैबरियल गार्सिया मारकेज़ और प्लिनियो आपूलेओ मेनदोज़ा के बीच संवाद

अनुवादक

समीर रावल

Published By

Rethink Foundation

Vill. Fatehgarh Chhanna

P.O. Deh–Kalan

Teh./Distt. Sangrur–148034

Sub–Office: 73A, Nilothi Ext.,

Vikaspuri Ext., Chandar Vihar,

New Delhi–110041

Website: www.rethinkfoundation.net

E–mail: sales@rethinkfoundation.net

Phone: 91 94648–95424

ISBN: 978–93–94737–23–5

Year: 2023

© Publisher

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher’s prior consent in any form of binding or cover than that in which it is published.

The Fragrance of Guava

By Plinio Apuleyo Mendoza.

Tr. By Sameer Rawal

Printed at:

D.K. Fine Art. Pvt. Ltd.

New Delhi.

अमरूद की महक 1982 में कोलम्बिया के लेखक व पत्रकार प्लिनियो आपूलेओ मेनदोज़ा और उनके पुराने दोस्त गैबरियल गार्सिया मारकेज़ के बीच लंबी बातचीत से जन्मी। बचपन और जवानी की यादें, कैरिबियाई छवियों व महकों के आभास, अनजान और मशहूर दोस्तों के साथ रिश्ते, साहित्य और रचनात्मकता, राजनीति और प्रतिबद्धता की बातें... जो ढूँढना चाहता है वो यहाँ वो चाबियाँ ढूँढ पाएगा जो गैबरियल गार्सिया मारकेज़ के ब्रह्मांड के कुछ दरवाज़ों को खोल देंगी...

अनुक्रम

शुरुआतें	5
उनके अपने	16
पेशा	30
प्रशिक्षण	52
अन्य पठन व प्रभाव	63
कार्य	75
इंतज़ार	90
एकाकीपन के सौ साल	101
एल ओतोन्यो देल पात्रिआर्का	113
आज	128
राजनीति	137
महिलायें	149
अंधविश्वास, जुनून, पसंद	160
प्रख्याति और प्रसिद्ध हस्तियाँ	171
अंत	184

शुरुआतें

एक ट्रेन जो बाद में पीली, धूल से भरी और दम घोंटने वाले गुबार से लिपटी हुयी याद पड़ती है हर दिन सुबह ग्यारह बजे केले के विशाल खेतों को पार कर गाँव पहुँचती थी। पटरी के साथ-साथ, धूल से भरे रास्तों पर हरे केले के गुच्छों से लदी बैलगाड़ियाँ धीरे-धीरे चल रही होती थीं। हवा बेहद गरम और नम होती थी और जब ट्रेन गाँव पहुँचती तो बहुत गर्मी हो जाती थी, और स्टेशन पर इंतज़ार कर रही औरतें अपने-आप को रंगीन टोपियों पहन कर सूरज की चमक से बचा रही होती थीं।

फर्स्ट क्लास के डिब्बों में विकर की सीटें होती थीं और थर्ड क्लास में सख्त लकड़ी के बेंच। कभी-कभी दूसरे डिब्बों से जुड़ा एक नीले शीशों वाला डिब्बा भी आ जाता था जो पूरी तरह से एयर-कंडीशन था और जिसमें केला कंपनी के बड़े अफसर हुआ करते थे। जो आदमी उस डिब्बे से उतरते थे उनके न तो कपड़े न देह का रंग मटमैला होता और न ही उनका हाव-भाव गाँव में चलते-फिरते लोगों की तरह उनींदा होता। ये आदमी झींगे की तरह लाल सुर्ख, भूरे और हट्टे-कट्टे होते थे, और ये खोजी लोगों के जैसे कपड़े पहनते थे साथ में कॉर्क के हेलमेट और पैर ढाँकने वाले पट्टियाँ। और इनकी महिलायें, जब वो साथ रहतीं, बहुत कमजोर लगती थीं, और अपने मलमल के कपड़ों में जैसे बहुत हैरान।

‘उत्तर अमरीकी’, उसके कर्नल नाना हीन भाव वाले लहज़े से बताते थे। ये वही हीन भाव था जो गाँव के पुराने परिवार सभी नए स्थापित हुए लोगों के लिए अख्तियार करते थे।

जब गैबरियल का जन्म हुआ तब भी उस केला खेती बुखार के कुछ अवशेष बचे थे

जिसने सालों पहले इलाके को झकझोर दिया था। अराकाताका सुदूर पश्चिम का एक गाँव प्रतीत होता था, न सिर्फ़ उसकी ट्रेन, उसके लकड़ी के घरों और धूल से भरी उबलती हुई गलियों के लिए बल्कि उसके मिथक और गौरवमय कथायों के लिए। 1910 के आस-पास जब यूनाइटेड फ्रूट ने केले के घने खेतों के बीचों-बीच अपने कैम्प लगाए तब गाँव ने एक गौरव और पतन के युग को जाना था। पैसा पानी की तरह बहता था। कहा जाता था कि नंगी औरतें आकाओं के सामने कुम्बिया नाचती थीं और वो अपने सिगार जलाने के लिए नोटों को आग में सुलगाते थे।

इसने और अन्य मिलते-जुलते मिथकों ने कोलम्बिया के उत्तरी तट पर स्थित इस भुला दिए गए गाँव को एक्सप्लोरर खोजियों और वेश्याओं के हुजूम से भर दिया था: ‘उन अकेली औरतों और उन आदमियों की बर्बादी जो होटल के किसी कोने में खच्चर पकड़े रहते थे, जिनके पास सामान के नाम पर या तो सिर्फ़ एक लकड़ी का कटोरा रहता या कपड़ों की एक गठरी।’

सबकी दादी यानी मैडम त्रांकिलीना, जिनका परिवार गाँव के सबसे पुराने परिवारों में से एक था, उनके लिए ‘वो अनजान चेहरों, आम रास्तों पर झोंपड़ें, सड़कों पर कपड़े बदलते आदमी, खुली छतरियों के तले मूढ़ों पर बैठी औरतों और होटल की ड्योढ़ी पर भूख से मरते हुए एक के बाद एक त्यागे गए खच्चरों का तूफान’ सिर्फ़ एक कूड़ा भर था, मतलब वो मल जो केले की अमीरी ने अराकाताका में ठूस दिया था।

नानी माँ घर पर राज करती थी, वही घर जिसे वो बाद में विशाल, पुरातन रूप में याद करता था, जिसमें एक दालान था जहां भयंकर गरम रातों में एक चमेली के पेड़ से आती